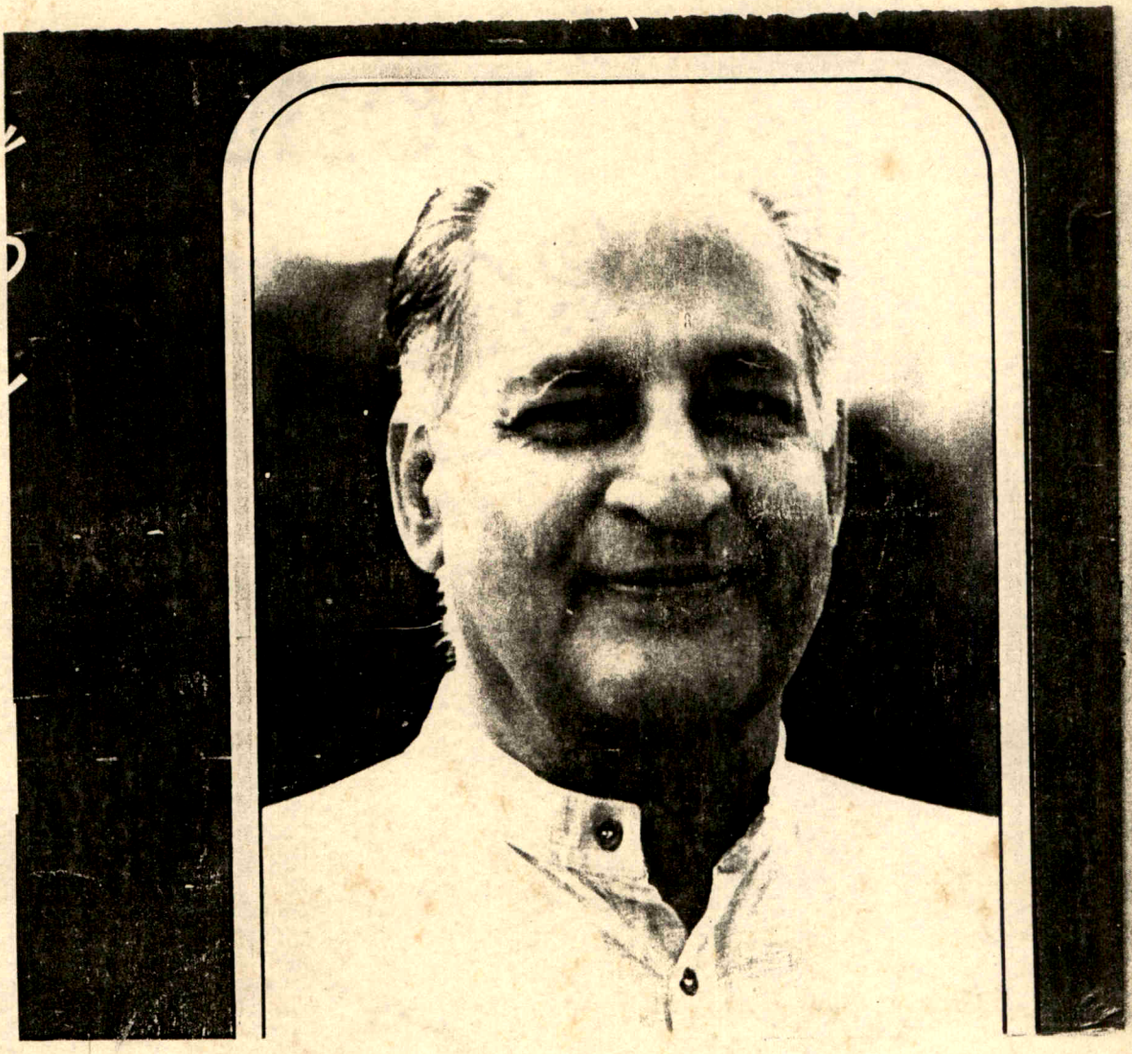

श्रद्धेय डॉ. प्रभाकर माचवे

प्र थ म अ ध्या य

प्रभाकर माचवे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. प्रभाकर माचवे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रास्ताविक --

डॉ.प्रभाकर माचवे मराठी भाषा भाषी हिन्दी साहित्यकार हैं। अहिंदी भाषी होते हुए भी उन्होंने हिन्दी की अटूट सेवा की और साहित्य की विविध विधाओं पर अपना अधिकार दिखाया। आप हिन्दी, मराठी और अंग्रेजी में समान अधिकार से लिखते रहे हैं, लेकिन वस्तुत: आपका रचनात्मक समर्पण हिन्दी के लिए ही है। आपने हिन्दी साहित्य की प्राय: हर विधा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है और प्रयोगशील शैली के कारण अपनी अलग पहचान बनाई है। साहित्य सम्बन्धी जानकारी इनके पास इतनी है कि, हिन्दी साहित्य के किसी भी पक्ष पर वे धाराप्रवाह शैली में निर्द्वन्द्व भाव से अपने विचार प्रकट करने की क्षमता रखते हैं। ' ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र का शायद कोई ऐसा अभागा विषय होगा जिसने आपकी ' अपूर्व मेधा ' और ' त्वरा लेखनी ' का संस्पर्श न प्राप्त किया हो।'[१] ज्ञान-क्षेत्र में आपकी श्रेष्ठता को लक्ष्य करके ही आपको ' Pilgrim of Knowledge '[२], ' चलते फिरते विश्वकोष '[३] और ' ज्ञान-पिपासु, बहुश्रुत एवं सरस साहित्यकार '[४] आदि उपमाएँ दी गई हैं।

डॉ.माचवे जी का व्यक्तित्व और परिणामत: कृतित्व भी बहुमुखी एवं बहुआयामी है, कहा भी जाता है कि हर सफल रचनाकार का कृतित्व उसके

---

१ सं.मारुतिनन्दन पाठक - डॉ.प्रभाकर माचवे:- सौ दृष्टिकोण, पृ.क्र.३०५।

२ -- वही - पृ.क्र.३२२।

३ -- वही - पृ.क्र.४१।

४ सं.मारुतिनन्दन पाठक - डॉ.प्रभाकर माचवे:- सौ दृष्टिकोण पृ.क्र.५९।

व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति बन जाता है। ` उनका बहुभाषा पांडित्य, प्रखर विद्वत्ता, प्रतिभाशाली लेखन,प्रभावी वक्तृता, उत्कट हिन्दी प्रेम और बहुआयामी कृतित्व को एक साथ किसी भी सुप्रतिष्ठित कवि या उपन्यासकार में नहीं पा सकते।`[१] इसीलिए आपको ` भारतीय साहित्य जगत् का निराला साहित्यकार `[२] कहा गया है,` आप जहाँ एक` बहु-पठित` और` बहु-श्रुत ` विचारक के रूप में हमारे समक्ष होते हैं, वहाँ आपको प्रयोगवादी कवि,सजग समीक्षक,गम्भीर निबन्धकार,कुशल कथाकार,अध्ययनशील भाषाशास्त्री और प्रभाववादी चित्रकार के रूप में भी माना जाता है।[३]

` विलक्षणताओं के स्वामी ` कहलानेवाले इस साहित्यकार का व्यक्तित्व सचमुच विलक्षण ही है, ऐसे व्यक्ति-जो असाधारण होकर भी साधारण है, संवेदना समेटे हुअे भी बेलौस है और जो हँसता मुसकराता आगे बढता जाता है -- के व्यक्तित्व को कई बिन्दुओं से देखना अपने आप में रोचक है। व्यक्तित्व को देखना इसलिए महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि व्यक्ति अपने आप में जो होता है, वह कुछ कर रचना में भी उपस्थित हो जाता है। माचवे जी का जीवन विविध संघर्षपूर्ण स्थितियों से गुजरा और यही स्थिति उनके साहित्यिक जीवन में भी रही है।

जीवन वृत्त : जन्म, आनुवांशिकता ---

डॉ.प्रभाकर माचवे जी का जन्म २६ दिसम्बर १९१७ को ग्वालियर राज्य में छत्री जार लश्कर में हुआ। बचपन अत्यन्त गरीबी में बीता। रविन्द्रनाथ ठाकुर की तरह आप भी अपने माता-पिता की चौदहवीं और अन्तिम सन्तान है। आपके घर में आप के साथ खेलने के लिए छोटे भाई-बहन न होनेसे आपका बचपन बहुत ही

---

१ सं.मारुतिनन्दन पाठक - डॉ.प्रभाकर माचवे :- सौ दृष्टिकोण - पृ.क्र.२११।

२ ` संपक्त - भारतीय साहित्य जगत् में अपने ढंग का निराला साहित्यकार`
सं.मारुतिनन्दन पाठक,-डॉ.प्रभाकर माचवे:सौ दृष्टिकोण -
पृ.क्र.२६७।

३ - वही - पृ.क्र. ३०५।

एकाकीपन में बीता । पिता के क्रोधी स्वभाव के कारण अक्सर आपकी पिटाई होती थी ।' संभवत: इसलिए कि प्रभाकर अन्तिम और अवान्छित सन्तान थे । माचवे जी बचपन में झोंपू बन गये । घर-बाहर निकलते ही नहीं थे, क्योंकि लड़के छेड़ते और पीटते भी थे ।'[१] आपके बड़े भाइयों ने भी आपसे विशेष अच्छा व्यवहार नहीं किया ।' पारिवारिक जीवन में भी कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं, जो किसी भी लेखक के लिए बहुमूल्य कच्चे माल का काम देती हैं ।'[२]

माचवे जी के पूर्वज महाराष्ट्र के 'वाळकी' गाँव के मूल निवासी थे, जो साहूकारी का व्यवसाय करते थे । लेकिन भ्रष्ट, व्यसनी और दुराचारी संतति द्वारा विलासी एवं अति व्ययी जीवन बिताने के परिणाम स्वरूप आपको गाँव छोड़ना पड़ा । इस प्रकार तीन पीढ़ी पूर्व आपके पूर्वज 'वाळकी' नामक छोटे से गाँव को छोड़कर मध्यभारत चले आए ।

दादा --

माचवे जी के दादा मध्यभारत के किसी राज्य में एक मुसलमान जमींदार के यहाँ सेवारत थे ।

पिता --

पिता श्री बलवन्त माचवे प्रथमत: रेलवे में नौकरी करते थे, रिटायर होने बाद ग्वालियर राज्य में पोस्ट मास्टर के रूप में कार्य करते थे । उनकी आर्थिक स्थिति निर्धनता से आक्रान्त थी, लेकिन उनका स्वभाव रईसाना ठाठ-बाटवाला था । भव्यता से जीवन निर्वाह करने की उनकी चाहत थी । गिरती आर्थिक स्थिति के अनुरूप स्वयं को बदल नहीं सके । पंद्रह रुपए की पेन्शन उन्हें मिलती थी, परिणामस्वरूप कर्ज होना स्वाभाविक था ।

---

१ सं.मारुतिनन्दन पाठक - डॉ.प्रभाकर माचवे:- सौ दृष्टिकोण - पृ.क्र.१२३ ।

२ - वही - पृ.क्र.१२३ ।

माचवे जी ने अपने पिता से दो प्रेरणाएँ पाई और उनका विनयपूर्वक पालन किया। प्रथम प्रेरणा थी - संस्कृत व्याकरण कंठस्थ करना तथा दूसरी प्रातः - जल्दी जगकर व्यायाम करना।

माता --

माचवे जी की माताजी जबलपुर की थीं। वह अनपढ थीं, लेकिन स्वभाव से बहुत ही सौम्य और स्नेहमयी थीं। उनके अनपढ होने के कारण ही माचवे जी उन्हें सभी धार्मिक पुस्तकें, एवं संत ज्ञानेश्वर, तुकाराम, रामदास और श्रीधर आदि की रचनाएँ पढकर सुनाते थे। प्रभाकर माता के अंतिम और लाडले पुत्र थे और इसीलिए माँ आपको बचपन में विभिन्न तीर्थस्थलों के दर्शनार्थ ले जाती थीं।

एक बार वे अपने पारिवारिक देवता विठ्ठल के दर्शनार्थ गई थीं। उस वक्त सुबह की प्रथम आरती, जिसे `काकडारती` कहा जाता है - के लिए मन्दिर में पहुँची। पुजारी ने अँधेरे में उन्हें भगवान के सामने झुकने के लिए कहा और उनके सोने के कडे छीनने का प्रयास किया। इस आघातकारी घटना का माचवे जी पर बहुत बडा असर हुआ।

माचवे जी कहते हैं कि, आपने अपने जीवन की घटनाओं का अपने साहित्य में सीधे इस्तेमाल नहीं किया सिवाय एक कविता के। प्रसंग यह था कि माचवे जी माँ के अन्तिम दर्शन से वंचित रह गये थे। इसी कारुण प्रसंग को लक्ष्य करके आपने `तारसप्तक` में माँ के प्रति एक कविता लिखी थीं।

भाई --

माचवे जी के दो भाइयों के सम्बन्ध में ही जानकारी मिलती है। सबसे बडा भाई बरुआ - सागर में रेलवे में स्टेशन मास्टर थे। स्नातक होने के बाद आपने इन्हीं के पास अपनी छुट्टियाँ बितायी थीं। बेतवा नदी के किनारे बसे इस छोटे से गाँव में ग्रामीण जिन्दगी में झाँकने का प्रथम अवसर माचवे जी को मिला।

एक और भाई रतलाम में दरबार हाइस्कूल में अध्यापक थे। वे गणित पढ़ाते थे। इसी हाईस्कूल में माचवे जी ने सीधे पाँचवी के बाद प्रवेश लिया था। भाई के इच्छानुसार आपने एक बार वकालत की परीक्षा भी दी थी। लेकिन आप इसमें अनुत्तीर्ण हुए।

बहनें --

माचवे जी की दोनों बहनें बाल-विधवा थीं, जिनपर उनके ससुराल वालों ने क्रूर अत्याचार किए। इनमें से जो बडी थीं उसके साथ तो इतना अमानवीय व्यवहार किया गया कि वह पागल बनी। उसे ससुराल वालों से अमानवीय यातनाएँ मिलती, जलती लकडी से उसे डराया-धमकाया जाता क्योंकि आठ वर्ष की मासूम बच्ची यह नहीं जानती थी कि, विधवा को किसतरह आचरण करना चाहिए। -- ससुराल वालों के व्यवहार से वह इतनी क्रुद्ध थी, कि उसने उनका हुआ भोजन कभी भी ग्रहण नहीं किया। वह अर्धनग्न परिवेश में रहती थी, स्मृति खो चुकी थी, वह थी बहुत सुन्दर। उसकी काली और बडी बडी आँखे शून्य में देखा करती मानो सामाजिक रूढियों की क्रूरता को घूरती प्रतित होती। वृद्धावस्था में मधुमेह से ग्रस्त होने से उनका देहावसान हो गया।

इससे भी ज्यादह दुखद घटना दूसरी बहन के साथ घटित हुअी, इनकी उम्र माचवे जी से दस साल से अधिक थी। यह केवल बारह साल की उम्र में ही विधवा हो गयी थी। माचवे जी ने उसके ससुरलाल वालों से लड़कर महिला महाविद्यालय पूना में बहन की पढाई पूरी करवायी। बाद में वह अध्यापक बनी। अपने इन दो बहनों पर जो हालत गुजरी उसके परिणामस्वरुप माचवे जी ने रूढियों, परम्पराओं तथा कुरीतियों के खिलाफ हमेशा विद्रोह किया।

सन्तान --

डॉ.माचवे जी का परिवार सन्तान की दृष्टि से सुनियोजित परिवार है। वे असंग नामक पुत्र और चेतना नामक पुत्री के पिता हैं। पुत्र असंग का विवाह पहले

एक पंजाबी फिर सिंधी महिला से और पुत्री चेतना का विवाह पंजाबी भाषा-भाषी सुरेश कोहली के साथ हुआ। इसीलिए शिव-मंगलसिंह 'सुमन' जी इन दोनों के विवाह को 'सांस्कृतिक सामासिकता की ज्वलंत मिसाल' कहते हैं।

शिक्षा --

माचवे जी की अधिकांश शिक्षा स्वावलंबन द्वारा हुई। 'टयूशन, साईन बोर्ड पेंटिन्ग्ज और लेखन से जो आय होती उससे किसी प्रकार काम चलाते।'[१] आपकी शिक्षा किसी एक स्थानपर नहीं हुई। बल्कि विभिन्न परिक्षाएँ आपने विभिन्न स्थानों से उत्तीर्ण की। शिक्षा के सम्बन्ध में आपकी एक और विशेषता यह है कि आपने प्राथमिक कक्षा से लेकर एम.ए.तक की सभी परीक्षाएँ अत्यन्त कम उम्र में उत्तीर्ण की।

प्राथमिक शिक्षा जबलपूर के निकट मदन महल नामक स्थान पर हुई। पाँचवी कक्षा के बाद केवल आठ साल की उम्र में सीधे हाईस्कूल में प्रवेश पा लिया। १९३० में दरबार हाई स्कूल रतलाम से मात्र तेरह साल की उम्र में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। साथ ही आपने हिन्दी विशारद की परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

१९३० में माचवे जी ने क्रिश्चियन कॉलेज, इन्दौर में प्रवेश पा लिया। १९३४ में बी.ए. की उपाधि पायी। आप तर्कशास्त्र के बहुत अच्छे विद्यार्थी थे। विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में आपने कई पुरस्कार हासिल किए। महाविद्यालय से निकलनेवाली पत्रिका का सम्पादन भी आपने किया।

आप महाविद्यालयीन शिक्षा लेते समय ही इन्दौर स्कूल ऑफ आर्ट के भी छात्र थे, जिसके फलस्वरुप आप एक चित्रकार भी हैं। वहाँ प्रसिद्ध चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन आपके सहपाठी रहे हैं। बेन्द्रे उनसे एक साल आगे थे।

---

१ सं.कमलकांत बुधकर - शिव जायसवाल - अक्षर अर्पण - पृ.क्र.१९।

१९३६ में उन्नीस साल की आयु में माचवे जी ने दर्शनशास्त्र विषय लेकर एम्.ए. की उपाधि प्राप्त की । आगरा विश्वविद्यालय से आपने यह उपाधि प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । कानून की परीक्षा भी दी थी, जिसमें आप अनुत्तीर्ण हुए । जीवन की यह एकमात्र परीक्षा थी, जिसमें आप असफल रहे ।

माचवे जी ने १९३६ में (नागरी प्रचारिणी सभा) द्वारा संचालित ' साहित्य-रत्न ' परीक्षा उत्तीर्ण की, इसमें आपने ' कविता में रहस्यवाद ' नामक विषय पर निबन्ध लिखा, जिसकी काफी प्रशंसा हुई । बाद में यह निबन्ध ' कल्पना ' में प्रकाशित हुआ । १९४३ में आपने अंग्रेजी साहित्य में फिर एक बार एम्.ए.किया ।

डॉ.माचवे ने १९५३ में पीएच्.डी. उपाधि हेतु अपना शोध-प्रबन्ध आगरा विश्वविद्यालय को प्रस्तुत किया । लेकिन विभिन्न अवरोधों के बाद आपको यह उपाधि १९५८ में मिली । आपके शोध प्रबन्ध का विषय ' हिन्दी और मराठी निर्गुण सन्त काव्य ' नामक तुलनात्मक था ।

शिक्षा के क्षेत्र में विविध सफलता रूप शिखर पादाक्रांत करते हुए भी आप मानते हैं कि आपको वास्तविक ज्ञान स्कूल - कॉलेजों में नहीं मिला ।

विवाह --

जीवन में विवाह एक महत्वपूर्ण मोड माना जाता है, और माचवे जी के बारे में तो यह बात ' असाधारण घटना ' रही है ।

अपनी भावी पत्नी को माचवे जी ने तब देखा जब आप माधव कॉलेज उज्जैन में लेक्चरर थे । शारद जी (माचवे जी की पत्नी) उनके पडोस में ही श्री पारख के घर में मेहमान बनकर आयी थीं । प्रथम दर्शन में ही आपको अनुभव हुआ कि वे अन्य लडकियों से एकदम भिन्न हैं । पूर्णत: अनलंकृत होने के बावजूद अत्यन्त आकर्षक थीं । हाथ से बुनी हुई साडी पहने हुए युवती को आप नहीं भूल

सके। माचवे जी छुट्टियों में अकाश बिताने सेवाग्राम गये थे। गांधीजी ने वर की दृष्टि से आप को देखा और उन्हें माचवे जी पसंद आये।

इसप्रकार नवम्बर १९४० को सेवाग्राम में गांधीजी के निरीक्षण में प्रभाकर माचवे जी का विवाह शारद जी के साथ अत्यन्त सादगी से संपन्न हुआ। गांधीजी ने खुद अपने हाथ से एक सौ आठ तार कातकर माला बनाई और माचवे जी के गले में डाली। कुल साठे नौ आने में शादी संपन्न हुई। कस्तुरबा माँ जी ने अपने हाथ से कते सूत की साडी शारद जी को भेंट की, जो आज तक सँजोकर रखी है। बा ने (कस्तुरबा) अपने हाथ से कते सूत की साड़ियाँ केवल दो लडकियों को दी थीं। एक शारद जी को और दूसरी साडी स्व.इन्दिरा गान्धी को। उसी दिन उसी स्थान पर अ.भा.काँ.कमिटी की बैठक थी। इसलिए वहाँ पर खान अब्दुल गफार खाँ, मौ.अबुल कलाम आझाद, सरोजिनी नायडू, आचार्य कृपलानी, जमनालाल बजाज आदि महत्वपूर्ण कार्यकर्तागण उपस्थित थे, इससे सभी सद् जन इस विवाह समारोह में आसानी से सम्मिलित हो सके। उस समय माचवे दाम्पत्य की पं.जवाहरलाल नेहरू से भी मुलाकात हुई।

व्यवसाय --

माचवे जी जून १९३७ को पहले पहल नौकरी के क्षेत्र में प्रविष्ट हुए, और ४० रु.प्रति माह पर मजदूर संघ इन्दौर के मंत्री नियुक्त किए गए। लेकिन इस कार्य में रुचि न होने के कारण आपने अक्टूबर १९३७ में इस्तीफा दे दिया।[१]

सेवाकाल का दूसरा दौर माधव कॉलेज, उज्जैन में लेक्चरर होने के साथ

---

१ सं.कमलकान्त बुधर - शिव जायसवाल - अदार अर्पण - पृ.क्र.१९।

आरम्भ होता है। वहाँ पर आप १९३९ से १९४८ तक ग्यारह साल अध्यापन करते रहे। प्रथम सात साल तक आप दर्शनशास्त्र के अध्यापक रहे और अन्तिम चार सालों में अंग्रेजी का अध्यापन किया। `यहाँ आपकी लोकप्रियता इतनी बढी कि परीक्षा काल में आपका घर `पोसाल` बन जाता था, सबेरे से साँझ तक विद्यार्थियों का जमघट बना रहता, उसमें अमीर-गरीब, हरिजन-सवर्ण तथा दर्शनशास्त्र अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी पढनेवाले सब शामिल होते।`[१] सन १९४८ में किसी कारण-वश आपको यह सुखकर प्रोफेसरशीप छोडनी पडी।

इसी साल माचवे जी ने राहुल सांकृत्यायन के साथ १६,००० शब्दों के अंग्रेजी-हिन्दी शासन शब्द-कोश का सम्पादन किया। इस काम के सिलसिले में आप भारत के आठ प्रांतों में घूमकर भाषा-शास्त्रियों तथा कोशकारों से मिले। हिन्दी के मिशनरी के भाँति आपने हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के लिए यह कार्य किया। इस कोश के लिए माचवे जी ने एक पैसा भी पारिश्रमिक नहीं लिया।

सन १९४८ में माचवे जी आकाशवाणी में आ गए। रेडियों में बिताया यह पाँच साल का कार्यकाल सबसे रद्दी तथा दयनीय था। आपका अपना अनुभव यह है कि, आकाशवाणी में लिखने-पढने वालों की, आदर्शवादी और स्वाभिमानी व्यक्ति की मौत है। आपने आकाशवाणी के नागपुर, इलाहाबाद और दिल्ली आदि प्रसारण केन्द्रोंपर काम किया।

माचवे जी १९५४ में दिल्ली के केन्द्रीय साहित्य अकादमी में सहायक सचिव के रूप में नियुक्त हुए। यह नियुक्ति पण्डित जवाहरलाल नेहरू और डॉ.राधाकृष्णन् के द्वारा हुई थी। अकादमी के कार्य में आपने अपना तन-मन डुबो दिया, इसी बीच आपने सारे देश का दौरा किया। आपके कार्य काल में अकादमी का विस्तार हुआ, मद्रास, कलकत्ता, बम्बई में उसकी शाखाएँ स्थापित हुई और अकादमी को

---

१ सं.कमलकान्त बुधकर - शिव जायसवाल - अक्षर अर्पण - पृ.क्र.१९।

विश्व संघटन-युनियन अकादमिक इन्टरनेशनल का सदस्य भी बना दिया गया ।

सन १९६० इ. में नेहरू जी ने माचवे जी को साहित्य अकादमी स्टाकहोम में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सत्र में भाग लेने के लिए भेजकर गौरव प्रदान किया, अकादमी के लिए आपने अनुवाद सहित नौ पुस्तकें लिखी, लेकिन आपने एक भी पैसा रायल्टी या पारिश्रमिक के रूप में नहीं लिया ।

साहित्य अकादमी के अपने कार्यकाल के दौरान १९५९ से १९६१ तक माचवे जी विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में अमेरिका में रहे । विसकोन्सिन युनिवर्सिटी के संस्कृत के प्रोफेसर फाउलर ने अपने नवस्थापित इण्डियन स्टडीज विभाग के लिए आपको आमंत्रित किया था । अध्यापन के लिए विषय थे - हिन्दी साहित्य और भारतीय साहित्य । लेकिन इन विषयों में उन छात्रों की कोई रुचि नहीं थी । गान्धी जयंति पर किए गए आपके व्याख्यान को इतनी लोकप्रियता मिली कि आपको और एक साल अमेरिका रुकने का अनुरोध किया गया । तब आपने गान्धी दर्शन का अध्यापन किया ।

साहित्य अकादमी के कार्यकाल में डॉ.माचवे जी द्वारा आयोजित तीन अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आपकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है । यह सेमिनार तीन महनीय व्यक्तियों की जन्म शताब्दि पर आयोजित किए गए थे । टैगोर जन्मशती १९६१ में, गांधी जन्मशताब्दि १९६९ में तथा अरविंद जन्म-शताब्दि १९७२ में आपके तत्वावधान में आयोजित हुई ।

सन १९६४ में जब लाल बहादूर शास्त्रीजी प्रधानमंत्री थे,तब उन्होंने संघ लोक-सेवा आयोग में विशेष भाषाधिकारी के रूप में डॉ. माचवे जी की नियुक्ति की, शास्त्रीजी के मृत्यु के पश्चात् आपको अकादमी के सहायक सचिव के पद पर लौटा दिया गया । सन १९७१ में केन्द्रीय साहित्य अकादमी के सचिव पद पर आपकी नियुक्ति हुई । १९७५ में २१ वर्ष की दीर्घ सेवा के पश्चात् ५८ वर्ष की उम्र में आपने स्वेच्छा से सेवा निवृत्ति ले ली ।

सन १९७६ से ७७ तक के एक वर्ष के काल में माचवे जी ने भारतीय उच्च

अध्ययन संस्थान, शिमला में मानद पार्षद के रूप में अधिकार पत्र हाथ में लिए, सन १९७८ में भाषा-विज्ञान संस्था आगरा में तीन मास के लिए अतिथि प्राध्यापक के रूप में डॉ.माचवे जी को आमंत्रित किया गया। सन १९७९ से १९८५ तक भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ता में निदेशक के रूप मे काम करते रहे। सन १९८५ में आपने वृन्दावन शोध-संस्थान में एक मास के लिए संचालक पद पर कार्य भार सँभाला। अक्तूबर १९८८ इ.से आप इन्दौर के 'चौथा संसार' नामक दैनिक का सम्पादन करते रहे हैं। आजकल आप इसी कार्य में व्यस्त हैं।

प्राप्त सम्मान --

सन १९७२ में माचवे जी को 'टालस्टाय और भारत' नामक अनुवादित ग्रंथ पर 'सोवियत लैन्ड नेहरू पुरस्कार' प्राप्त हुआ,।

सन १९७७ में आपकी षष्ठिपूर्ति पर हरिद्वार में 'अंगार-अर्पण' नामक ग्रंथ अर्पित किया गया।

सन १९८३ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा कुरुक्षेत्र में आयोजित अधिवेशन में माचवे जी को 'साहित्य वाचस्पति' उपाधि से विभूषित किया गया।

सन १९८५ में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से राजीव गांधी के हाथों रु.२१,०००- का सम्मान पुरस्कार दिया गया।

सन १९८५ में मित्र परिषद,कलकत्ता द्वारा ११,०००- रु.का पुरस्कार तथा आपके नामपर स्मारिका प्रकाशित की गयी।

सन १९८७ में दिल्ली हिन्दी अकादमी का ११,००० रु.का साहित्यकार सम्मान दिया गया।

व्यक्तित्व --

माचवे जी का व्यक्तित्व अपने विशिष्ट एवं असाधारण गुणों के कारण साहित्यकारों की दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान एवं अपना प्रभाव बनाए हुआ है। लम्बा कद, गेहुँआ रंग, दृष्ट-पुष्ट शरीर, चौडा ललाट एवं वक्षस्थल और नुकीली नाक , विलक्षण प्रतिभा, गम्भीर अध्ययन, साहित्यों की विस्तृत जानकारी

तथा देश के अनेक भूभागों के यात्रा-अनुभव से सज्जित यह हैं श्री प्रभाकर माचवे ।'[१] जगदीश नारायण वेारा ने माचवे जी के समग्र व्यक्तित्व को इन शब्दों में बाँधने का प्रयास किया है । आपके आकर्षक और सदाबहार व्यक्तित्व के सम्बन्ध में शिवमंगल सिंह सुमन जी कहते हैं, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, सुडौलयष्टि में माचवे जी का व्यक्तित्व स्वयं में ही एक आकर्षण है ।'[२]

माचवे जी हमेशा सीधा-सादा खादी का वेश परिधान करते हैं । प्रसंगौचित्य देखकर पैन्ट-बुश शर्ट तथा कुर्ता-पाजामा का भी इस्तेमाल करते हैं । विदेशों में अधिक तर नेहरू जी की तरह काली शेरवानी पहनना आपने अधिक पसंद किया । लेकिन वेशभूषा के मामले में आप अक्सर लापरवाह होते हैं । ' वेशभूषा, साजसज्जा के प्रति इतनी लापरवाही न होती तो वे अच्छे राजपुरुष दिखाई पड़ते, पर शायद यही लापरवाही आपकी अपनी विशेषता है ।'[३] खान-पान के सम्बन्ध में भी आपकी यही स्थिति है । आप कहते हैं,' खाने-पीने में मेरे कोई नखरे या प्रिफरेन्सेज नहीं हैं । रूखे-सूखे से पंच पक्वान तक सब स्वीकार्य है ।'[४]

माचवे जी न केवल शरीर से स्वस्थ है, बल्कि मन से भी स्वस्थ है, इसीलिए आप हमेशा खुश रहते हैं । परिहासशीलता, आपके व्यक्तित्व की खासियत है,। ' उनकी प्रत्येक समय प्रसन्नचित्त मुद्रा,खुला ठहाका,लोगों को यही दर्शाता है कि वे जीवन्त बादशाह हैं ।'[५] अपने हँसोड, तथा मिलनसार व्यक्तित्व के कारण सामने वाले को बहुत ही जल्द आत्मीय बना लेने का हुनर आपमें है । वसन्त परांजपे आपके सम्बन्ध में कहते हैं, कि' यह कहा जाता है कि अच्छे लोगों के साथ मैत्री स्थापित करने को लिए सात कदम काफी हैं, लेकिन

---

१ सं.कमलकान्त बुधकर - शिव जायसवाल - अदार - अर्पण - पृ.क्र.१८ ।

२ - वही - पृ.क्र.५३ ।

३ - वही - पृ.क्र.५३ ।

४ - वही - पृ.क्र.६२ ।

५ सं.मारुतिनन्दन पाठक - डॉ.प्रभाकर माचवे - सौ दृष्टिकोण - पृ.क्र.२२५ ।

माचवे जी जैसे व्यक्ति के साथ मित्रता स्थापित करने के लिए एक ही कदम काफी है।'[१] माचवे जी प्राय: लोगों से घिरे रहते हैं और हँसते हँसाते रहते हैं। अपने आपपर व्यंग्यबाण चलाना भी आप नहीं भूलते। आप कहते हैं कि हर व्यक्ति में हमेशा एक व्यंग्य - चित्र छिपा रहता है।

माचवे जी के साहचर्य में किसी आरोपित मुद्रा या विद्वत्ता के कृत्रिम नकाब का लेशमात्र भी अनुभव नहीं होता। आपके इस सरल,सहज स्वभाव के सम्बन्ध में डॉ.सीता राठौर कहती हैं, ' ऐसा सरल-सहज स्वभाव,निरभिमानी मन, निर्मल आँखें और निश्छल हँसी नहीं देखी थी। शायद विद्या के गहरे सम्पर्क, ज्ञान के यथार्थ स्पर्श, देश-विदेश दूर-दूर तक जाकर संसार की वेदना को समीप से देखने और मनुष्य को हृदय से प्यार करने के कारण माचवे जी को यह दुर्लभ सहजता मिली है।'[२]

प्रभावशाली वक्ता और सफल अध्यापक होने के परिणामस्वरूप माचवे जी में बातचीत करने का प्रचंड उत्साह है। बातचीत में अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर अपना सुनाने की आकर्षक अदा भी है। देने के लिए इतना कुछ रहता है कि सुननेवाला सुनता ही रह जाए। डॉ.माचवे ने कभी मजाक में कहा था,' मैं समाजीत सिंह हूँ।'[३] सचमुच किसी भी सभा को सहज ही में जीतने का सामर्थ्य आपमें है।

नरसी मेहता के ' वैष्णव जन तो .... ' पद में लिखे अनुसार ' पर दु:खे उपकार करे मन अभिमान न आणे रे'[४] माचवे जी जरूरतमंदों की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। ' माचवे जी मदद के मसीहा व विसर्जन के देवता हैं।

---

1. 'It is said that seven steps are enough to make friendship with good people - (सतां हि सख्यं सप्तपदीमुच्यते) But with persons like Machaveji one step is enough '
सं.मारुतिनन्दन पाठक - डॉ.प्रभाकर माचवे - सौ दृष्टिकोण - पृ.क्र.३३९।

२ - वही - पृ.क्र.२८०।

३ - वही - पृ.क्र.८२।

४ प्रस्तोता - सुराणा - माचवे जीवन यात्रा - एक पड़ाव कलकत्ता - पृ.क्र.३०।

अपरिग्रह शब्द को अपने व्यवहार में उतारते हुए इस विद्याव्यसनी व्यक्ति ने हजारों पुस्तकें भी जरूरतमंद व्यक्तियों, सभा-संस्थाओं को सहजता से दे दी।'[१] इसप्रकार अपरिग्रह, उदारता, सरलता, सहजता और सादगी आदि गुण आपके हृदयपक्ष की देन है।

कबीर की प्रतिमूर्ति --

डॉ.माचवे जी स्पष्टवक्ता हैं।' माचवे खरी बात करने में कबीर हैं और शायद इसीलिए दूसरे लोग उनके प्रति स्पष्ट - तुष्ट रहते हैं।'[२] अन्दर-बाहर से स्फटिक सम शुभ्र यह व्यक्ति स्पष्ट - वचन के लिए बेहद बदनाम हैं। द्रोणवीर कोहली आपके इसी स्वभाव को लक्ष्य करते हुए कहते हैं --' माचवे जी में एक गुण या अवगुण कह लीजिए - यह है कि इनमें छिपाव दुराव बिलकुल नहीं है।'[३] आपकी आदत से नावाकिफ आदमी आपको मुँहफट भी कह सकता है। लेकिन' उनके बाहरी स्पष्ट व्यक्तित्व को यदि चीर कर उनके हृदय तक पहुँच जाए तो वहाँ प्रेम का अपार सागर मिलता है।'[४]

आपके स्वभाव में कबीर की तरह एक औलियापन है, फक्कड़पन है और फकीराना अंदाज है। इसी ने आपको बचाया भी है, नहीं तो इतनी उपेक्षाएँ सहकर, प्रतिगामी आलोचनाएँ सुनकर भी अपने आप में प्रकृतिस्थ रहना कोई साधारण बात नहीं है। डॉ.रणवीर रांग्रा ने आपको कहा है,' विरोध-मासों का संगम,' सो वस्तुत: सही प्रतीत होता है, क्योंकि आपके सम्बन्ध में जब हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे हिन्दी के श्रेष्ठ आलोचक आपको' बहुश्रुत एवं सरस साहित्यकार' कहते हैं, तो

---

१ सं.कमलाकान्त बुधकर, शिव जायसवाल - उदार अर्पण - पृ.२२।

२ सं.मारुतिनन्दन पाठक - डॉ.प्रभाकर माचवे - सौ दृष्टिकोण - पृ.१२४।

३ - वही - पृ.८०।

४ प्रस्तोता - रणतलाल सुराणा - माचवे जीवन यात्रा - एक पड़ाव कलकत्ता पृ.३१।

दूसरी ओर आलोचकों का ऐसा गुट है, जो आपको साहित्यकार तक मानने को तैयार नहीं है।` वास्तव में साहित्य की दुनिया में ऐसा वर्ग हर काल और हर युग में रहा है, जो अपने समय के सशक्त रचनाकारों को नकारता रहा है।`[१]

आयु के सत्तर साल बीत जाने के बाद आज भी माचवे जी में वही अध्ययनशीलता, जिज्ञासावृत्ति एवं अथक परिश्रमशीलता देखने को मिलती है। मनुष्य को हमेशा अपनी जिज्ञासा वृत्ति बनाए रखनी चाहिए। यह स्पष्ट करते समय माचवे जी कहते हैं,` मेरे गुरू राहुल सांकृत्यायन कहा करते थे, कि वर्णमाला के प्रथम अक्षर `अ` और आखिर `ज्ञ` से मिलकर शब्द `अज्ञ` बनता है, और मनुष्य को वही बनकर विद्यार्थी के रूप में रहना चाहिए।`[२] आज ७३ साल की उम्र में अध्ययनशील वृत्ति के साथ साथ आपकी शारीरिक उमंग, उत्साह तथा निरालस्य सजगता देखते ही बनती है। वस्तुत: आपके व्यक्तित्व के इन विविध आयामों को ध्यान में रखकर ही कहा गया है कि` माचवे जी का जीवन एक विशाल ग्रंथ है और वह ग्रंथ है, जिसका प्रत्येक पृष्ट प्रेरणा का है। वैयक्तिक साधना के उत्कर्ष पर चलने वाला व्यक्ति समाज के लिए कितना योग दे सकता है। उसका वे एक उदाहरण हैं।'[३] इस प्रकार डॉ.माचवे जी में एक सृजनशील व्यक्तित्व और मानवीय गुणों से युक्त व्यक्तित्व हमेशा कार्यशील रहता है।

कृतित्व --

सर्जक और उसकी कृतियों में बहुत गहरा परस्पर सम्बन्ध रहता है। वस्तुत: सृजनकर्ता का पूरा प्रतिबिम्ब ही उसकी कृतियों में भी उभरकर आता है। डॉ. माचवे जी का बहुआयामी व्यक्तित्व अनायास ही आपकी कृतियों में लक्षित होता है।

---

१ सं.कमलकिशोर गोयनका ,भूमिका से - प्रभाकर माचवे - प्रतिनिधि रचनाएँ

२ प्रस्तोता - रतणलाल - माचवे - जीवन यात्रा - एक पडाव कलकत्ता सुराणा - पृ.२७।

३ प्रस्तोता - रतणलाल सुराणा - माचवे जीवन यात्रा - एक पडाव कलकत्ता पृ.क्र.२७।

माचवे जी के लेखन में विस्तृत ज्ञान एवं अनेक जानकारियों की झलक दिखाई देती है। साहित्य की विविध विधाओं में आप अपने व्यापक अध्ययन तथा ज्ञान को समाविष्ट करना चाहते हैं। परिणामत: आपमें स्थित कलाकार का व्यक्तित्व दब-सा जाता है।

डॉ.माचवे जी के साहित्यिक व्यक्तित्व में प्रयोगशीलता का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, `प्रयोग उनकी विशेषता है, आदत है, प्रकृति है और प्रवृत्ति में कहीं गहराई तक नये नये प्रयोग करने की झलक है।`[१] इस सम्बन्ध में माचवे जी कहते हैं, `प्रयोग असफल हो सकते हैं। पर इस कारण से प्रयोग करने का साहस ही न किया जाय। यह मैं नहीं मानता।`[२]

माचवे जी के लिए कविता और चित्रकला के अतिरिक्त सर्वाधिक रुचि और आकर्षण दर्शन में था। परिणामत: माचवे जी के सम्पूर्ण साहित्य में `दर्शन की गुत्थियों का उलझाव तथा व्यावहारिक धरातल पर विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं की प्रामाणिकता का आकलन करने का प्रयास मिलता है।`[३]

माचवे जी मूल रूप से व्यंग्यकार होने से साहित्य की विभिन्न विधाओं में आपके सर्जक व्यक्तित्व का व्यंग्यकार उपस्थित रहता है। आपकी यह व्यंग्य की प्रवृत्ति आपके साहित्य में सर्वत्र व्याप्त है ही। लेकिन ललित निबन्धों में यह प्रवृत्ति प्रमुख रूप से विद्यमान है।

अत्यन्त कम उम्र में ही माचवे जी ने लिखना प्रारम्भ किया था। १९३२ में इन्दौर में अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में, चौदह वर्षीय कुमार प्रभाकर ने अपनी कविता पढ़ी, जिसे प्रथम पुरस्कार तथा रजत-पदक

---

१ डॉ.रणवीर नागर - डॉ.प्रभाकर माचवे के साहित्य का अनुशीलन और हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को उनका योगदान, विक्रम विश्वविद्यालय के अप्रकाशित शोध प्रबन्ध से उधृत - पृ.क्र.१८।

२ -- वही --

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

३ -- वही -- पृ.क्र.२५।

प्राप्त हुआ । सन १९३४ में माचवे जी की प्रथम हिन्दी कविता माखनलाल चतुर्वेदी जी ने ' कर्मवीर ' में छापी । माखनलाल चतुर्वेदी जी पद्य के क्षेत्र में आपके प्रेरणा-स्त्रोत तथा पथ - प्रदर्शक रहे हैं । सन १९३५ में आपकी प्रथम कहानी प्रेमचंद जी ने ' हंस ' में छापी । गद्य में साहित्य लेखन की प्रेरणा आपने प्रेमचंद जी से पाई ।

मराठी, हिन्दी तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं में माचवे जी ने ग्रन्थ - लेखन किया । उनकी संख्या लगभग सौ के आसपास है । लेकिन आपका पूरा समर्पण हिन्दी के लिए ही है ।

उपन्यास --

डॉ.माचवे जी के अब तक सोलह उपन्यास प्रकाशित हुए हैं । आपके अधिकतर उपन्यास प्रयोगशील शिल्प को लेकर उपस्थित हुए हैं । उपन्यास विधा के क्षेत्र में माचवे जी के उपन्यास उल्लेखनीय स्थान रखते हैं । ' उनके उपन्यास ऐसे विषयों को उठाते हैं,जिनकी चर्चा कम ही हुई हो । आप अपने उपन्यासों से विगत अतीत की भारतीय परम्परा को कथावस्तु के अन्तर्गत गुंफित करते हुए साम्प्रत की जटिल समस्या ओं का मनोविश्लेषण करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं ।'[१] इस प्रकार प्राचीन संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान समस्याओं का मूल्यांकन बहुत ही रोचक लगता है ।

डॉ. माचवे जी के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय इस प्रकार दिया जा सकता है । ---

१. परन्तु --

' परन्तु ' माचवे जी का प्रथम उपन्यास है । प्रस्तुत उपन्यास का सृजन प्रयोगात्मक शिल्प को लेकर हुआ है । इसमें डॉ. माचवे जी ने भूख, सेक्स, भय और युयुत्सा आदि चार आदिम प्रवृत्तियों को मूलाधार माना है । कथा की नायिका हेम है , जो आर्थिक विवशताओं से मजबूर होकर पूँजीपति के शारीरिक अत्याचार की

---

१ सं.कमलकान्त बुधकर - शिव जायसवाल - अक्षर अर्पण, पृ.३१ ।

शिकार बन जाती है। इस सम्पूर्ण प्रसंग में आर्थिक विवशता तथा नौकरी के छूट जाने की आशंका से हेमवती उफ् तक नहीं करती और वह वृद्ध साहूकार अपने पोपले अधरों से उसके यौवन का सारा रस चूस लेता है।'[१] नौकरी छूटने का भय सरजू पांडे नामक सेवक को भी है, जो अपने कामांध सेठ को ऐसे शर्मनाक कृत्यों में सहायता करता है।' वर्तमान युग में पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था के परिणाम स्वरूप किस प्रकार हमारे सामाजिक जीवन में घुन लग गया है और कितनी तीव्रता से जीवन के नैतिक मूल्य गिरते जा रहे हैं। इस तथ्य की ओर माचवे जी ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है।'[२] हेमवती की समस्याएँ और विवशताएँ हेमवती की ही नहीं, बल्कि समस्त नारी जाति की विवशताएँ हैं।

प्रस्तुत उपन्यास की प्रमुख विशेषता यह है, कि हिन्दी में अन्त: संज्ञा प्रवाह शैली में लिखा यह प्रथम ही उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में उद्धरण शैली, पत्र शैली के अतिरिक्त समाचार-पत्र पठन, पुस्तक-पठन जैसी अभिनव शैलियों का भी प्रयोग किया गया है।

२. द्वामा --

' द्वामा ' डॉ. माचवे जी का लघु-उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में नारी की चिरन्तन समस्या को मनोविश्लेषणात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है।

' द्वामा ' में परित्यक्ता नारी की पीडा व्यक्त हुई है।' अतीत की मिथ्या जकडन और वर्तमान की अस्थिर मूल्यवत्ता तथा विखण्डित मानसिकता के बीच नारी पिसती है, टूटती है।'[३] कथा-नायिका द्वामा, परित्यक्ता नारी है, जिससे उसके पति, श्री विमुख हो चुके हैं। उसके लिए समाज और जीवन - दोनों भी शून्य बन

---

१ डॉ.त्रिभुवन सिंह - हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद - पृ.२६५।

२ शैल रस्तोगी - हिन्दी उपन्यास में नारी , पृ.

३ सं.मासतिनन्दन पाठक - डॉ.प्रभाकर माचवे - सैा दृष्टिकोण, पृ.१७।

चुके हैं।` वह पुरातन और नवीन मान्यताओं के बीच मँझधार में नौका की भाँति डोलती रहती है। उसके लिए केवल एक किनारा है -- मरण और वह दाय रोग से ग्रसित होकर अपने प्राणों का परित्याग कर देती है।`[१] लेखक ने यहाँ नायिका के द्वारा यह महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है कि ` क्यों ऐसा होता है कि समाज में खुले माथे से प्रतिष्ठा और गौरव से लदे वे लोग घूमते हैं, जो स्त्रियों के साथ जिम्मेदारी का व्यवहार नहीं करते, जो नारी को निरा खिलौना समझते हैं और पापिणी कहलाती है, बेचारी स्त्रियाँ।[२]

इस प्रकार पुरुष नारी की भावनाओं से खेल खेलता आया है और आज भी नारी` पुरुष` के द्वारा छली जा रही है।

प्रस्तुत उपन्यास के प्रस्तुतीकरण में चरित्र चित्रण की विभिन्न शैलियों - डायरी शैली, पत्र शैली, उद्धरण शैली, पुस्तक, पत्र-पठन शैली को अपनाया गया है।

३.<u>एकतारा</u> --

एकतारा` नायिका प्रधान उपन्यास है। यह सन बयालीस के भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। उपन्यास की नायिका ` तारा` क्रान्तिदल की सदस्या है। क्रान्ति के दौरान विभिन्न पुरुष सहकर्मियों के द्वारा किए गए व्यवहार से वह क्षुब्ध हो उठती है और उसके सामने एक विराट प्रश्नचिन्ह आ खडा होता है कि` क्या नारी आज के समाज में या कभी भी अकेली नहीं रह सकती ?`[३] उपन्यासकार भी इसी समस्या को नाटक का मुख्य बिन्दु निर्धारित करता है और ` तारा` के माध्यम से इस प्रश्न पर मुखर चिन्तन करता है।

---

१ सुषमा धवन - हिन्दी उपन्यास, पृ.क्र.२७० ।

२ डॉ.प्रभाकर माचवे - द्वाभा - पृ.क्र.९४ ।

३ डॉ.प्रभाकर माचवे - एकतारा, पृ.क्र.३४ ।

भारतीय संस्कृति की इस व्यवस्था पर कि,' स्त्री का जब तक विवाह नहीं होता तब तक वह पिता की, विवाह होने के बाद पति की और पति के मरने पर पुत्र की सम्पत्ति है।'[१] तारा का विद्रोही मन धिक्कारने लगता है। ' है। ऐसी संस्कृति पर जहाँ स्त्री को ढोल, शूद्र, दास और पशु की भाँति अधिकार में रखने योग्य वस्तु मान लिया गया है।'[२] प्रस्तुत उपन्यास में नारी की स्वयंपूर्ण तथा स्वतंत्र होने की छटपटाहट तथा रूढियों का विद्रोह करने की प्रेरणा बडी ही आकुलता से व्यक्त होती है।

प्रस्तुत उपन्यास को प्रभावात्मक बनाने के प्रयास में लेखक ने इसमें पत्र शैली, उद्धरण शैली, एवं सिंहावलोक शैली का प्रयोग किया गया है।

४. सौंचा --

' सौंचा' माचवे जी का वैचारिक उपन्यास है। लेखक का मूल कथ्य इसमें इस प्रकार व्यक्त हुआ है,' साँचे में आप मिट्टी के लोदों को ढाल लीजिए,आत्मा का यांत्रिकी करण संभव नहीं।'[३] संक्षेप में उपन्यासकार यह स्पष्ट करना चाहता है कि वर्तमान युग में सब कुछ साँचे में ढाला जा सकता है, परन्तु मनुष्य को नहीं। पीठिका में लेखक का कहना है,' व्यक्तिवाद एवं आदर्शवाद से मनुष्य का पूरी तरह वंचित हो जाना, आदमी को काठ का घोडा बना देना है, उसे' साँचे ' का आदमी बना देना है।'[४]

प्रमुख रूप से ' लेखक यह बताना चाहता है कि यंत्र किस तरह मनुष्य की आत्मा को निर्जीव कर देता है और उसे मानवीय भावनाओं की उदार और तरल संवेदनाओं से वंचित कर देता है[५]।' यांत्रिकीकरण के दुष्परिणामों के साथ साथ लेखक

---

१ डॉ.प्रभाकर माचवे - एकतारा - पृ.क्र.३५।

२ - वही - पृ.क्र.३५।

३ डॉ.प्रभाकर माचवे - सौंचा - पृ.क्र.८ ।

४ - वही - पृ.क्र.९।

५ डॉ.रणवीर नागर - डॉ.प्रभाकर माचवे के साहित्य का अनुशीलन और हिन्दी साहित्य को विभिन्न विधाओं को उनका योगदान - विक्रम विश्वविद्यालय के अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध से उधृत-पृ.१०८।

ने मजदूरों की समस्यापर भी कलम उठायी है।

लेखक को साँचे से इतनी चिढ़ है कि, वह उपन्यास को भी किसी साँचे में नहीं ढालना चाहते, उसे कोई रूप नहीं देना चाहते प्रस्तुत उपन्यास में डॉ. माचवे जी ने पत्र शैली, उद्धरण शैली, डायरी शैली , कविता शैली आदि विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है।

५. जो --

`जो ` मानव जाति में फैली रंगभेद की समस्या पर आधारित उपन्यास है। स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में ` जो ` अपनी तरह का एकमात्र उपन्यास है। इसमें एक अमरीकी नीग्रो के संघर्ष रत जीवन की करुण कहानी चित्रित है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने भारत की अछूत समस्या के परिप्रेक्ष्य में अमरीकी नीग्रो समस्या का विश्लेषण किया है।` उपन्यासकार अमरीका के काले गोरे लोगों की वर्ण - द्वेष की समस्या को और भारत के ब्राह्मण - अब्राह्मण, या सवर्ण-हरिजन की समस्या को भिन्न दृष्टिकोण से देखे जाने के विरुद्ध है। `[१] उपन्यासकार के गांधीवादी विचारों का प्रभाव भी यहाँ अभिलक्षित होता है।

डॉ.माचवे के शिल्प की सबलता, समर्थता, नवीनता एवं प्रयोगशीलता हमें दृष्टिगत होती है ,[२] प्रस्तुत उपन्यास में साक्षात्कार शैली और विचार प्रवाह शैली प्रयोग में लायी गयी है।

६. किशोर --

` किशोर ` में लेखक ने छात्र-आन्दोलन का प्रश्न उठाया है। लेखकीय

---

१ डॉ.रणवीर नागर - डॉ.प्रभाकर माचवे के साहित्य का अनुशीलन और हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को उनका योगदान - विक्रम विश्वविद्यालय के अप्रकाशित शोध प्रबंध से उधृत - पृ.क्र.१११।

२ -- वही -- पृ.क्र.११३।

वक्तव्य के अनुसार यह उपन्यास बदलते वर्ग-सम्बन्धों के संघर्ष की कहानी है। इसमें ` बुद्धि जीवियों और तथाकथित नेताओं के खोखलेपन पर टिप्पणी के साथ व्यंग्य भी है।[१] ` उपन्यासकार ने सर्वत्र मध्यम वर्गीय सामान्य मनुष्य को अपनी पूरी आस्था दी है।

` वस्तुत: यह उपन्यास अनेक कारणोंसे मूलत: ` धन की मूल्यवत्ता ` से सम्बद्ध कहा जा सकता है।[२] ` उपन्यास के प्रारम्भ में ` किशोर ` अपनी विमाता, पिता, प्रोफेसर वर्मा, जटा शंकर आदि सभी से उपेक्षित - सा रहता है। पर लाटरी का पुरस्कार मिलते ही उसका व्यक्तित्व इनकी नजरों में उभर उठता है।

` किशोर ` का वैशिष्ठ्य यह है कि डॉ.माचवे जी ने इसमें छात्र-वर्ग की दुर्दशा के लिए उनके माता-पिता को दोषी ठहराया है। इस मत की पुष्टि के लिए आपने गांधीजी का वक्तव्य भी आरम्भ में दिया है। इससे स्पष्ट है कि यह गांधीजी की विचारधारा का ही प्रभाव है।

७. तीस-चालीस-पचास --

डॉ.प्रभाकर माचवे जी का यह उपन्यास अपनी परिधि में इस समूचे युग की उथल-पुथल को मार्मिक ढंग से व्यक्त करता है। इसमें तीन पीढियों - कॉंग्रेसी, कम्युनिस्ट, हिप्पी के माध्यम से बीसवीं शताब्दी में बडी तेजी से बदल रहे मानव की कथा बडे रोचक ढंग से कही गई है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने दो खंड कल्पित किए हैं। उपन्यास के प्रथम खंड में तीन पीढियों के तीन-तीन स्त्री-पुरुषों की जबानी उनकी स्थितियों की कहानी कही गयी है। दूसरे खंड में, जिसे लेखक ने ` दिक् ` कहना अधिक उचित समझा है,

---

१ डॉ.प्रभाकर माचवे - किशोर - भूमिका से।

२ डॉ.रणवीर नागर - डॉ.प्रभाकर माचवे के साहित्य का अनुशीलन और हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं को उनका योगदान - विक्रम विश्वविद्यालय के अप्रकाशित शोध प्रबन्ध से उधृत - पृ.क्र.११५।

यही छह पात्र काल के बन्धन तोड़कर तीन खंडों में घूमते हैं। उन्हीं परिवारों और परिवेशों की यह कथा है।

'एक पीढ़ी जो क्रांतिकारी दिखती है, वस्तुत: उसकी क्रान्तिकारिता पिछली पीढ़ी के प्रति घृणा की अभिव्यक्ति होती है -- इस तथ्य को माचवे जी ने भलीभाँति रेखांकित किया है। साथ में यह भी बता दिया है कि हर तथाकथित क्रांतिकारी पीढ़ी अपनी अगली पीढ़ी को समझ नहीं पाती और न उनकी भिन्न राह को सहिष्णुतापूर्वक झेल भी सकती है। वस्तुत: हर क्रांतिकारी अपनी अलग राह के लिए छूट चाहता है -- वह मनसा सही अर्थ में क्रांतिकारी नहीं होता। यह तथ्य उपन्यास का एक सशक्त पक्ष है।'[१]

८. दर्द के पैबन्द --

प्रस्तुत उपन्यास नायिका प्रधान उपन्यास है। यह उपन्यास दो खण्डों में विभाजित है। प्रथम खंड की नायिका ऋता है, जो स्वयं अपनी कहानी कहती है। लेकिन दूसरे खंड की नायिका रीटा इस आत्म कथात्मक शैली का निर्वाह नहीं कर सकती और कहानी आगे बढ़ाने के लिए स्वयं लेखक को कथा के सूत्र अपने हाथ लेने पड़ते हैं।' उपन्यास का प्रतिपाद्य यही है, कि हमारे देश में जब बड़े-बड़े नेता एवं महापुरुषों के नाम का डंका बज रहा था, फिर भी स्थिति तो 'दिए तले अँधेरा' जैसी ही रही थी।'[२] इस देश में सेवाग्राम, शान्ति निकेतन एवं अरविन्दाश्रम जैसी संस्थाओं की स्थापना तो हुई, परन्तु सेवाग्राम के महारों, बंगाल के संथालों और पाण्डिचेरी के पास के गरीब आदिवासी मजदूरों के दु:ख - दर्द वैसे ही हैं। आज भी गांधी-अरविंद-रविंद्र के नाम बड़े जोर-शोर से लिए जाते हैं। लेकिन उनके आदर्शों का पालन नहीं हो पा रहा है।

इसके अतिरिक्त लेखक नायिकाओं के माध्यम से वैवाहिक सम्बन्धों पर भी

---

१ सं.कमलकान्त बुधकर - शिव जायसवाल - अदार - अर्पण - पृ.क्र.११।

२ सं.कमलकान्त बुधकर - शिव जायसवाल - अदार अर्पण - पृ.क्र.३५-३६।

चिन्तन करता है। इनके माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि वैवाहिक जीवन परस्पर विरोध और स्वार्थपरता से नष्ट हो जाते हैं।

९. द्यूत --

` डॉ.माचवे का यह उपन्यास प्रयोगशीलता का नया आयाम लेकर प्रस्तुत होता है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखक ने यह तथ्य प्रतिपादित करने का प्रयास किया है कि जीवन की प्रत्येक क्रीडा की ` द्यूत ` में परिणति हो जाती है। संसार का कोई कार्य, घटना, परिवर्तन, अच्छा-बुरा, शुभ-अशुभ, नैतिक-अनैतिक, मर्यादा-भ्रष्ट आचरण, सुख-दु:ख सब जुए की तरह अनिश्चितता के सत्य से आबद्ध हैं। उपन्यास के प्रमुख पात्र धर्मराज और द्रौपदी की योजना भी महाभारत के ` द्यूत-पर्व ` से सम्बद्ध युधिष्ठिर और द्रौपदी से जुडी हुई है। उपन्यास के इस व्या सत्य के साथ माचवे जी ने यहाँ भारत के गाँवों को सुधारने के विविध साधनों पर विचार किया है। इसमें डायरी शैली एवं पत्र शैली का प्रयोग किया गया है। इसकी और एक विशेषता यह है कि इसमें भविष्य दर्शन शैली का प्रयोग हुआ है

१०. लक्ष्मीबेन --

प्रस्तुत उपन्यास नायिका-प्रधान उपन्यास है। उपन्यास में इस नारी के पाँच रूप हैं, जिसके लिए ` एक ही नाल पर पंचदल कमल ` का प्रतिक लिया जा सकता है। जिस प्रकार एक नाल पर पंचदल कमल खिलता है, उसी प्रकार नारी एक ही लेखा एक परित्यक्ता पत्नी और माँ है। उसका व्यक्तिगत जीवन अन्तर्द्वन्द से पूर्ण है। यही अन्तर्द्वन्द उसे भिन्न भिन्न रूप ग्रहण करने को मजबूर करता है और किसी भी रूप के साथ वह समझौता नहीं कर सकती। वह अध्यापिका, समाजसेविका एम.एल.ए., योगिनी और लेखिका बनती है। हर एक क्षेत्र में दूषित वातावरण देखकर वह इस प्रकार अपना व्यावसायिक चोला बदलते जाती है। उसे सभी जगह पर आलोचना सहनी पडती है। ` नारी के सारे रूप उसके ` नारीरूप ` पर ही पुर रूप से अवलम्बित है। यद्यपि सभी रूप भिन्न भिन्न हैं, परन्तु यदि उनमें समरसता रहे तो नारीशक्तिरूपा हो सकती है। इसी में ` पंच ` का महत्व और भारतीय

परम्परा में इसका विकास देखा गया है।` [१]

११. कहाँ से कहाँ --

` कहाँ से कहाँ ` प्रयोगशील उपन्यासों के नये आयाम प्रस्तुत करता है। इसमें शिल्प के साथ कथा वस्तु भी प्रयोगशीलता से अनुप्राणित है। यह उपन्यास विभाजन की समस्या को लेकर लिखा गया है।` देश का विभाजन,मनोवृत्ति का विभाजन, मानसिकता का विभाजन,जाति का विभाजन, धर्म का विभाजन, आदि विभिन्न विभाजित स्थितियों से घिरे पात्रों के माध्यम से विभाजन की विभिषिका का दिग्दर्शन डॉ. माचवे ने कराया है।` [२]

प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने डायरी शैली, साक्षात्कार शैली, लोक-गीत की प्रस्तुति, उद्धरण शैली, पत्र शैली आदि विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है।

१२. दशभुजा --

` दशभुजा `माचवे जी का तेरहवाँ उपन्यास है। यह उपन्यास नायिका प्रधान है। उपन्यास की नायिका ` आदिति ` पति की छलना का शिकार बन जाती है। वह परित्यक्ता का जीवन बिताती है। उसके इस जीवन में उसे विविध समस्याओं, कठिनाइयों, अत्याचारों का सामना करना पड़ता है। आज भी जब एक ओर कहा जाता है, कि नारी शक्ति है, देवी है, तो दूसरी ओर वास्तव में उसकी स्थिति कितनी शोचनीय है, यह द्रष्टव्य है। ` स्त्रियों की साक्षरता,स्वतंत्रता के तैंतीस वर्ष बाद और एक दशक से उपर,एक महिला प्रधानमंत्री के होते हुए ,अभी भी नारी दयनीय और शोभनीय अवस्था में है। यह उपन्यास उसी आक्रोश का एक

---

१ डॉ.कृष्णा रैणा - प्रभाकर माचवे के हिन्दी उपन्यास - पृ.क्र.८६।

२ डॉ.रणवीर नागर - डॉ.प्रभाकर माचवे के साहित्य का अनुशीलन और हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को उनका योगदान - विक्रम विश्वविद्यालय के शोधप्रबन्ध से उधृत - पृ.क्र.१२५।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

चित्र है, एक असहाय स्त्री की दृष्टि से।'[१] साथ-साथ इसमें कलकत्ता के महानगरीय जीवन का दारुण और वास्तववादी चित्र भी है। इसमें उद्धरण शैली का प्रयोग अधिकांश रूपसे किया गया है।

१३. आँखें मेरी बाकी उनका --

डॉ.प्रभाकर माचवे जी का यह चौदहवाँ उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक आपने अकबर इलाहाबादी की प्रसिद्ध कविता,' दिल्ली दरबार' की एक पंक्ति लेकर रखा है। अत्यंत दक्षिणपंथी से अत्यंत वामपंथी विविध मतों और वादों के सात नेताओं के साक्षात्कार यहाँ दिए गए हैं। उनके साथ कार्य करनेवाली महिला कार्यकर्तियों के भी साक्षात्कार इसमें सन्निहित हैं। यह सब व्यंग्य चित्रकार की सी शैली में प्रस्तुत है। परंतु यह केवल व्यंग्य उपन्यास मात्र नहीं है, बल्कि उसमें एक दार्शनिक स्तर भी है -- मनुष्य का अस्तित्व क्या है ? जीवन का अंतिम परिणाम क्या है ? मृत्यु का अर्थ क्या है ? काल आखिर क्या है ? आदि सवालों को भी लेखक ने यहाँ उठाया है।

१४. लापता --

प्रस्तुत उपन्यास भाषा-शैली और शिल्प की दृष्टि से अन्य उपन्यासों से बिलकुल अलग है। दर असल' लापता' आज के एक' आउट साइडर' भारतीय की भटकन, उसकी भीतरी कशमकश और समाज में खोई हुई पहचान को बचाए रखने की कथा है। प्रस्तुत उपन्यास में माचवे जी ने तस्करी, नकली-तांत्रिकों की धंदेबाजी, धार्मिक व्यावसायिकता जैसे कलंकी भ्रष्टाचारों की सच्ची तस्वीर अंकित की है। इसीलिए माचवे जी का यह उपन्यास रोचक, रोमांचक और आज के संदर्भ में सार्थक बन पडा है।

---

१ डॉ. प्रभाकर माचवे - दशभुजा - पृ.क्र.५।

१५. अनदेखी --

डॉ.प्रभाकर माचवे जी का यह सोलहवाँ उपन्यास है। और आपके अबतक लिखे गये उपन्यासों में अंतिम उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास नायिका प्रधान उपन्यास है। इसमे निम्न मध्यवर्ग की गरीब, अकेली, उपेक्षिता और विश्वासघात की शिकार बनी साधारण नारी की मनोव्यथा का सजीव चित्रण है। उपन्यास में इस उपेक्षिता नायिका के पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यक्षेत्रों में भोगे हुये अनुभवों का लेखा-जोखा चित्रित है।

उपन्यास आत्मकथात्मक शैली एवं प्रवाहपूर्ण भाषा में लिखा गया है। इसमें उद्धरण शैली एवं पत्र शैली का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास प्रयोगशीलता से अनुप्राणित है।

१६. किस लिए -- अप्राप्त।

एकांकी - साहित्य--

डॉ.माचवे जी का एकमात्र एकांकी संग्रह 'गली के मोड पर' -- प्रकाशित है। प्रस्तुत संग्रह में सात एकांकी संकलित हैं। इनकी विशेषता यह है कि इसमें बेजान वस्तुओं को पात्र बनाया गया है। लेटर बॉक्स, लैम्पोस्ट और दीवार जिस पर पोस्टर चिपकाएँ जाते हैं, आपस की बातचीत में मनुष्यों के व्यवहार की टिप्पणी करते हैं। 'कथ्य की नवीनता और ताजगी माचवे जी की अपनी विशेषता यहाँ भी दिखाई पड़ती है।'[१] सभी एकांकी प्रयोगशील प्रवृत्ति एवं व्यंग्यात्मकता से परिपूर्ण हैं।

---

१ सं.मारुतिनन्दन पाठक - डॉ.प्रभाकर माचवे - सौ दृष्टिकोण - पृ.क्र.१८।

कविता संग्रह --

१. तार-सप्तक
२. स्वप्नभंग
३. अनुदान
४. मेपल
५. विश्वकर्मा ।

डॉ.माचवे जी हिन्दी साहित्याकाश में प्रमुख रूप से ' तारसप्तक ' के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए । उनके अब तक उपरोक्त पाँच कविता-संग्रह प्रकाशित हुए हैं ।

हिन्दी कविता के विकास-क्रम में ' तारसप्तक ' का महत्व निर्विवाद है । ' इसी से प्रयोगवादी काव्यधारा की शुरुआत मानी जाती है ।' [१]

' स्वप्नभंग ' में सौ श्रेष्ठ सॉनेट संकलित हैं । इसमें सॉनेट - शैली की परिपक्वता के साथ विषय और शिल्प भी परिपक्व है ।' माचवे जी सॉनेट शैली के हिन्दी में प्रथम समर्थ कवि है ।' [२]

निरन्तर नवीनता, प्रयोगशीलता तथा व्यंग्य का आधिक्य आदि विशेषताएँ माचवे जी की काव्य-रचनाओं में स्पष्ट रूप से द्रष्टव्य हैं ।

कहानी संग्रह --

१. संगीनों का साया --

---

१ डॉ.रणवीर नागर - डॉ.प्रभाकर माचवे के हिन्दी साहित्य का अनुशीलन और हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को उनका योगदान विक्रम विश्वविद्यालय के अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध से उधृत - पृ.क्र.७२ ।

२ सं.मारुतिनन्दन पाठक - डॉ.प्रभाकर माचवे - सौ दृष्टिकोण -पृ.क्र.१३ ।

डॉ.माचवे जी का उपरोक्त एकमात्र कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ है। इसमें संकलित अधिक तर कहानियाँ शोषितों और पीडितों पर हैं।

निबन्ध एवं व्यंग्य साहित्य --

१. खरगोश के सींग
२. बैरंग
३. तेल की पकौडियाँ
४. विसंगति
५. खबरनामा।

डॉ.माचवे जी के उपरोक्त पाँच व्यंग्य - निबन्ध संग्रह प्रकाशित हुए हैं। माचवे जी प्रमुख रूप से व्यंग्यकार हैं। ` हास-परिहास, शब्द-क्रीडा और व्यंग्य के तो माचवे जी मास्टर हैं `[१] आपके व्यंग्य की अलग खासियत यह है कि ये व्यंग्यबाण कई परतों को चीर कर पार हो जाते हैं, जिनसे मुग्ध हुए बिना या कभी चोट खाए बिना बच पाना मुश्किल है। आपके व्यंग्य का लक्ष्य कभी भी व्यक्ति न होकर प्रवृत्ति होता है। हास - परिहास और शब्द-क्रीडा से व्यंग्य चैतन्य उत्पन्न करने की कला में माचवे जी सिध्दहस्त हैं।

यात्रा-वर्णन --

१. गोरी नजरों में हम
२. रूस में।

यायावर के रूप में माचवे जी विख्यात हैं। प्रवास का आपको बहुत ही शौक रहा है आपने भारत के हरहिस्से की काफी यात्राएँ की हैं। विदेश यात्रा

---

१ सं.मारुतिनन्दन पाठक - डॉ.प्रभाकर माचवे - सेा दृष्टिकोण - पृ.क्र.१८।

के दौरान अमरीका और रुस की भी यात्रा आपने की जिसका विवरण अपनी उपरोक्त दो यात्रा-वर्णन परक किताबों में दिया है।

जीवनी --

१. छत्रपति शिवाजी --

प्रस्तुत ग्रंथ में माचवे जी ने छत्रपति शिवाजी की जीवनी लिखकर शिवाजी से सम्बधित छोटी, अच्छी और दिलचस्प पुस्तक के अभाव की पूर्ति की है। यह पुस्तक छत्रपति शिवाजी के राज्यारोहण की त्रिशताब्दी के उपलक्ष्य में लिखी गई है।

दर्शन --

माचवे जी दर्शन के गम्भीर विद्वान हैं। दर्शन आपके प्रिय विषयों में से एक है। अत: इस क्षेत्र में भी आप कलम चलाने से नहीं चूके। आपकी निम्न तीन दार्शनिक किताबें प्रसिद्ध हुई हैं।

१. विभिन्न धर्मों में ईश्वर कल्पना
२. आधुनिक भारतीय विचारक
३. सौ सवाल : एक जवाब

भाषा सम्बन्धी रचना --

भारत की पंद्रह भाषाएँ - बोलिए और सीखिए --

भारत की विविध भाषाओं के जानकार हैं.माचवे जी ने लोगों का अन्य प्रांतीय भाषा का ज्ञान बढाने के लिए उपरोक्त ग्रंथ का सृजन किया है। इसमें भारत के संविधान द्वारा स्वीकृत भाषाओं में से संस्कृत को छोड़कर अन्य सभी चौदह भाषाओं के दैनिक जरुरती कुछ चुने हुए वाक्य दिए हैं।

रेखा चित्र --

प्रस्तुत अनोखे ढंग की किताब में देशी-विदेशी महापुरुषों और साहित्यकारों के रेखाचित्र संकलित हैं। इसकी खासियत यह है कि इसमें हर रेखाचित्र के साथ साथ दूसरी ओर उस व्यक्ति की कोई मानवीय विशेषता जो आपने देखी, उसका शब्दांकन भी किया है। शब्दांकन में कम से कम शब्दों में रेखांकित व्यक्ति की झलक मिलती है। प्रस्तुत किताब में कुल इक्यावन (५१) रेखाचित्र संकलित हैं।

शोध-ग्रन्थ --

१. हिन्दी और मराठी निर्गुण सन्त काव्य --

प्रस्तुत ग्रंथ डॉ.माचवे जी के पी.एच.डी.शोध प्रबन्ध का संक्षिप्त रूप है। इस विषय पर लिखने प्रेरणा १९५१ में आपको राहुल सांकृत्यायन से मिली। डॉ.शिवमंगल सिंह `सुमन` के निर्देशन में सन १९५३ में दार्जिलिंग में आपने यह ग्रंथ दो महिने में लिखा। इस शोध ग्रंथ का प्रकाशित संस्करण पाँच खण्डों में विभाजित है।

बाल साहित्य --

१. असम
२. केरल
३. महाराष्ट्र
४. आदिवासी बच्चे।

उपरोक्त बालोपयोगी किताबों का भी सृजन डॉ.माचवे जी ने किया है।

समीक्षा ग्रन्थ --

डॉ.माचवे जी में एक अच्छे आलोचक की समझ और संस्कार आरंभ से ही होने के कारण उन्होंने समीक्षा के क्षेत्र में काफी लेखन किया है। आप पूरब और पश्चिम के साहित्य और आलोचना से गहराई से परिचित हैं। स्वयं रचनाकार होने से आपकी आलोचना दृष्टि स्वस्थ और स्पष्ट है ही। साहित्य से व्यापक परिचय का फायदा आपको समीक्षात्मक कृतियों के सृजन मे हुआ। साहित्य-सम्बन्धी समीक्षात्मक रचनाओं के संकलन के रूप में उनकी उन्नीस पुस्तकें प्रकाशित हैं।

अनुदित ग्रन्थ --

डॉ.माचवे जी बहुभाषी होने के कारण आपने अनेक भाषाओं की महत्वपूर्ण किताबों का अनुवाद हिन्दी में किया। आपके अनुवादित कृतियों की विशेषता यह है कि वे सिर्फ अनुवाद ही नहीं है, लेकिन उनमें रचना का मूल सौन्दर्य भी निहित है।[1] आपके द्वारा अनुदित कृतियों की संख्या अठारह है। इसीसे आपके इस क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण योगदान का अनुमान लगाया जा सकता है।

सम्पादित ग्रन्थ --

डॉ.माचवे जी ने विविध ग्रंथों का सम्पादन किया है। आपके सम्पादित ग्रंथों की संख्या पंधरह है। इसीसे आपके सम्पादन-कौशल की कल्पना की जा सकती है।

---

1. His translations here not only translations; They always carried the essence of the original flavour '
सं.मारुतिनन्दन पाठक -
- डॉ.प्रभाकर माचवे - सौ दृष्टिकोण - पृ.क्र.३३८।

निष्कर्ष --

वस्तुत: माचवे जी का जीवन ही एक विशाल ग्रंथ है, जो निरन्तर प्रेरणादायी बन कर रहेगा । आप अपने निराडंबर, मिलनसार, स्नेहशील, हंसमुख और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के कारण साहित्यकारों की दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं । आपमें अंतर्राष्ट्रीयता की भावना मिलती है, जिससे आपके आचरण में विशालता का व्यवहार मिलता है । ज्ञान और स्नेह का अजस्त्र स्त्रोत निरन्तर आपसे प्रवाहित होता रहता है, जिसमें अवगाहन करने की अनुभूति पाकर हम स्वयं को कृतार्थ महसूस करते हैं ।

माचवे जी हिन्दी के समृद्ध, विलक्षण एवं प्रयोगधर्मी साहित्यकार हैं । प्रयोगशील वृत्ति के कारण आपने साहित्य में ही नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन में भी रूढ़ियों से विद्रोह किया है । आपने अपनी अज्ञात जिज्ञासा और अखंड पिपासा बनाए रखते हुए जो कुछ समाज में देखकर अनुभूत किया, उन्हीं बातों को साहित्य के माध्यम से पेश किया । अत: आपके साहित्य में समाज का यथार्थ चित्र मिलता है ।

आपके विशाल कृतित्व का, जिसमें कविता, कहानी, उपन्यास, एकांकी, व्यंग्य-विनोद से लेकर शोध-संपादन, अनुवाद और कोश-निर्माण तक शामिल है -- सम्यक मूल्यांकन होना अभी शेष है ।